



### **15. महात्मा गाँधी के धर्म-संबंधी विचारों पर प्रकाश डालिए।**

**उत्तर:-** महात्मा गाँधी अपने जीवन में धर्म को सर्वोच्च स्थान देते थे। धर्म के बिना वे एक कदम भी चलने को तैयार नहीं थे। वे सर्वत्र धर्म का पालन करते थे। उनके धर्म के स्वरूप को समझना आवश्यक है। धर्म से महात्मा गांधी का मतलब, धर्म ऊँचे और उदार तत्वों का ही हुआ करता है। वे धर्म की कट्टरता के विरोधी थे। प्रत्येक व्यक्ति का यह कर्तव्य है कि वह धर्म के स्वरूप को भलि-भाँति समझ ले। वे सत्य और अहिंसा को ही परम धर्म मानते थे।

### **16. सबके कल्याण हेतु अपने आचरण को सुधारना क्यों आवश्यक है?**

**उत्तर:-** जन कल्याण हेतु आचरण में शुद्धता अतिआवश्यक है। यदि हम धार्मिक बनेंगे अर्थात् अपना व्यवहार अच्छा, सदाचार पूर्ण रखेंगे तो दूसरों को समझाना भी आसान हो। सबके कल्याण हेतु अपने आचरण को सुधारना इसलिए आवश्यक है क्योंकि जब हम खुद को ही नहीं सुधारेंगे, दूसरों के साथ अपना व्यवहार सही नहीं रखेंगे तब तक दूसरों से क्या आशा रख सकते हैं।

निम्नलिखित के आशय स्पष्ट कीजिए —

**17. उबल पड़ने वाले साधारण आदमी का इसमें केवल इतना ही दोष है कि वह कुछ भी नहीं समझता-बूझता, और दूसरे लोग उसे जिधर जोत देते हैं, उधर जुत जाता है।**  
**उत्तर:-** साधारण आदमी धर्म के नाम पर उबल पड़ता है, चाहे उसे धर्म के तत्वों का पता न हो क्योंकि उनको यह पता है कि धर्म की रक्षा पर प्राण तक दे देना चाहिए। धर्म के बारे में अंधविश्वास रखते हैं और इसका फायदा चालाक लोग, स्वार्थी लोग उठा लेते हैं। उनसे अपना स्वार्थ सिद्ध कराते हैं और वे भी उसमें बिना विचारे जुट जाते हैं।

**18. यहाँ है बुद्धि पर परदा डालकर पहले ईश्वर और आत्मा का स्थान अपने लिए लेना, और फिर धर्म, ईमान, ईश्वर और आत्मा के नाम पर अपनी स्वार्थ-सिद्धि के लिए लोगों को लड़ाना-भिड़ाना।**

**उत्तर:-** लेखक का विचार है कि विदेश में धन की मार है तो भारत में बुद्धि की मार। भारत में धर्म के कुछ महान लोग साधारण लोगों को भ्रमित कर देते हैं। जो स्थान ईश्वर और आत्मा का है, वह अपने लिए ले लिया जाता है। फिर इन्हीं नामों अर्थात् धर्म, ईश्वर, ईमान, आत्मा के नाम पर अपने स्वार्थ की सिद्धि के लिए सामान्य दुरुपयोग कर शोषण करते हैं। साधारण लोगों को आपस में लड़ाया जाता है।

**19. अब तो, आपका पूजा-पाठ न देखा जाएगा, आपकी भलमनसाहत की कसौटी केवल आपका आचरण होगी।**

**उत्तर:-** नमाज पढ़ना, शंख बजाना, नाक दबाना यह धर्म नहीं है, शुद्ध आचरण और सदाचार धर्म के लक्षण हैं। पूजा के ढोंग का धर्म आगे नहीं टिक पाएगा। ऐसी पूजा तो ईश्वर को रिश्त की तरह होती है। बेईमानी करने और दूसरों को दुःख पहुँचाने की आजादी धर्म नहीं है। इसलिए आने वाले समय में केवल पूजा-पाठ को ही महत्व नहीं दिया जाएगा बल्कि आपके अच्छे व्यवहार को परखा जाएगा और उसे महत्व दिया जाएगा। आने वाला समय दिखावे वाले धर्म को नहीं टिकने देगा।

**20. तुम्हारे मानने ही से मेरा ईश्वरत्व कायम नहीं रहेगा, दया करके, मनुष्यत्व को मानो, पशु बनना छोड़ो और आदमी बनो !**

**उत्तर:-** निम्न पंक्तियों का आशय यह है कि केवल मानने से ईश्वर का अस्तित्व नहीं रहेगा बल्कि यदि सही मायनों में हम उसका अस्तित्व कायम रखना चाहते हैं तो हमें हिंसा छोड़कर मानवता को अपनाना होगा।

• भाषा अध्ययन

21. उदाहरण के अनुसार शब्दों के विपरीतार्थक लिखिए

—

1. सुगम
2. धर्म
3. ईमान
4. साधारण
5. स्वार्थ
6. दुरूपयोग
7. नियंत्रित
8. स्वाधीनता

- उत्तर:- 1. सुगम — दुर्गम
2. धर्म — अधर्म
  3. ईमान — बेईमान
  4. साधारण — असाधारण
  5. स्वार्थ — निःस्वार्थ
  6. दुरूपयोग — सदुपयोग
  7. नियंत्रित — अनियंत्रित
  8. स्वाधीनता — पराधीनता

22. निम्नलिखित उपसर्गों का प्रयोग करके दो-दो शब्द बनाइए –

ला, बिला, बे, बद, ना, खुश, हर, गैर

उत्तर:-

ला	लाइलाज, लापता
बिला	बिलावजह, बिलानागा
बे	बेहद, बेकसूर
बद	बदनसीब, बदसूरत
ना	नासमझ, नादानी
खुश	खुशकिस्मत, खुशहाली
हर	हररोज, हरदम
गैर	गैरकानूनी, गैरहाजिर

### 23. उदाहरण के अनुसार 'त्व' प्रत्यय लगाकर पाँच शब्द

बनाइए —

उदाहरण : देव + त्व = देवत्व

उत्तर:- नारी + त्व = नारीत्व

प्रभु + त्व = प्रभुत्व

महत् + त्व = महत्त्व

मनुष्य + त्व = मनुष्यत्व

बंधु + त्व = बंधुत्व

### 24. निम्नलिखित उदाहरण को पढ़कर पाठ में आए

संयुक्त शब्दों को छाँटकर लिखिए —

उदाहरण — चलते-पुर्जे

उत्तर:- पढ़े — लिखे

लड़ाना — भिड़ाना

दिन — भर

सुख — दुःख

मन — माना

नित्य — प्रति

पूजा — पाठ

स्वार्थ — सिद्धि

भली — भाँति

देश — भर

**25. 'भी' का प्रयोग करते हुए पाँच वाक्य बनाइए —**

**उदाहरण — आज मुझे बाजार होते हुए अस्पताल भी जाना है।**

**उत्तर:-** 1. चार बातें सुनकर गम खा जाते हैं फिर भी बदनाम हैं।

2. गाँव के इतिहास में यह घटना अभूतपूर्व न होने पर भी महत्वपूर्ण थी।

3. झूरी इन्हें फूल की छड़ी से भी न छूता था। उसकी टिटकार पर दोनों उड़ने लगते थे। यहाँ मार पड़ी।

4. कुत्ता भी बहुत गरीब जानवर हैं, लेकिन कभी-कभी उसे भी क्रोध आ जाता है, किन्तु गधे को कभी क्रोध करते नहीं सुना।

5. उसके चेहरे पर एक स्थायी विषाद स्थायी रूप से छाया रहता है। सुख-दुःख, हानि-लाभ, किसी भी दशा में बदलते नहीं देखा।

\*\*\*\*\* END \*\*\*\*\*